कृतज्ञता

मैं सर्वप्रथम परमपिता परमेश्वर को हृदय से प्रणाम करना चाहती हूँ कि जिनके आशीर्वाद से सम्पूर्ण कार्य करने में मदद मिली है। ईश्वर की कृपा से इस वड़ोदरा भूमि में अपनी उच्च शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा पूर्ण कर पाई हूँ, इसलिए इस भूमि को शत शत प्रणाम करती हूँ।

कोई भी शोध कार्य को पूर्ण एवं सफलता प्रदान करने के लिए व्यक्ति विशेष के प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में सहयोग की आवश्यकता पड़ती है। इस शोध कार्य को सम्पन्न करने के लिए जिन्होने अपने अमूल्य सुझाव, निर्देशन एवं पर्यवेक्षण के द्वारा मूर्त रूप दिया उन सभी के प्रति मैं हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

इस शोध अध्ययन की पूर्णता में सर्वप्रथम मैं अपने शोध निर्देशक गुरु डॉ. राजेश केलकर सर (डीन, फ़ैकल्टि ऑफ परफोर्मिंग आर्ट्स के वर्तमान तथा गायन विभाग के विभागाध्यक्ष) के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ, जिन्होंने इस शोध कार्य को पूर्ण करने में परिस्थितिजन्य विषमताओं एवं विश्वविद्यालयीय उत्तरदायित्वों का निर्वाहन करते हुए सदैव ही तथा अपने कुशल मार्गदर्शन से एवं स्नेहाभिसिंचन से मेरे मनोबल को बढ़ाया और हमेंशा इस शोध कार्य के लिए प्रेरित किया।

मैं अपनी गुरुमा डॉ. जानकी मिठाईवाला के चरणाविन्द में कोटि-कोटि प्रणाम करती हूँ जिन्होंने सांगीतिक शिक्षा के साथ साथ शोध कार्य करने का बीज भरने से लेकर अन्त तक पूर्णता अपने कुशल मार्गदर्शन से हमेंशा प्रेरित किया। गुरुमा के सम्पूर्ण परिवार के प्रति कृतज्ञता अर्पित करती हूँ जहां मैंने अपार स्नेह पाया और घर से दुर होते हुए भी दूसरे परिवार के रूप में आश्रय और अपनापन प्राप्त हुआ। भारत में प्रवेश करते ही अपनी सांगीतिक यात्रा शुरू करने में मेरे प्रथम पुज्य गुरु स्वर्गीय पं. गणेश प्रसाद मिश्र ने अमूल्य साथ एवं मार्गदर्शन किया, जिसके लिए मैं सहृदय शत शत नमन करती हूँ।

मैं विभाग के सभी आदरणीय अध्यापकगण एवं कलाकारों के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने मुझे इस कार्य के दौरान अमूल्य मार्गदर्शन प्रदान किया है।

मैं अपने परिवार के सभी सदस्यों की आभारी हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में इस कार्य को सम्पन्न करने में सहयोग किया है। सर्व प्रथम पूजनीय पिता स्वर्गीय हीरा गोविन्द महर्जन को प्रणाम करती हूँ। माता मोहन माया महर्जन, जिन्होंने जीवन के प्रत्येक पथ पर अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए विविध रूप में मार्गदर्शन किया। भाई तथा भाभी को प्रणाम करती हूँ जिनकी सहायता से कार्य को सुचार रूप में पूर्ण कर पायी हूँ। मेरे पिता समान फूफा जी स्वर्गीय राम कृष्ण महर्जन को सहृदय से प्रणाम करती हूँ

जिन्होंने पिता समान जिम्मेवारी का वहन करके हमेंशा ही उचित मार्गदर्शन दिया है। इस शोध कार्य में विशेष सहयोग करने के लिए परम सखी/बहन कोमल सुबेदी को हृदय से धन्यवाद देती हूँ जिन्होंने इस कार्य के हरेक पल में मेरे साथ दिया है तथा ब्रह्माकुमारी वेदकुमारी दीदी को प्रणाम करती हूँ जिनका स्नेह और आशीर्वाद हमेंशा मिला है।

मेरी जन्मभूमि नेपाल होने से इस शोधकार्य को सम्पन्न करने के लिए नेपाल के मेरे आदरणीय गुरुजनों एवं मित्रों की अमूल्य भूमिका रही है। सर्वप्रथम मेरे आदरणीय गुरु गुज्जे मालाकार तथा विरप्रसाद भण्डारी सर को कोटि कोटि प्रणाम करती हूँ जिन्होंने इस शोध के लिए आवश्यक तथ्यों को संकलन करने में एवं विभिन्न क्षेत्रों में मेरे साथ जाकर साक्षात्कार आदि के साथ-साथ अन्य कार्य में हमेंशा मेरी सहायता के लिए तत्पर रहे।

शोध कार्य का तथ्य संकलन करने के लिए अमूल्य समय एवं उचित मार्गदर्शन प्रदान देने वाले आदरणीय प्रो. न्हुच्छेमान डंगोल सर, रामकृष्ण दुवाल सर, काजीमन डंगोल सर, शेष नारायण महर्जन सर, गणेशराम लाछी सर, जनकवि दुर्गालाल श्रेष्ठ सर, भृगुराम श्रेष्ठ सर, सुरेन्द्र श्रेष्ठ भैया, मुक्तिनाथ महर्जन चाचा, ज्ञानेश्वर महर्जन सर, हरी शरण मानन्धर चाचा, राजेन्द्र महर्जन सर, टीकालाल भैया तथा सखी दीपा महर्जन तथा पुष्पा के प्रति कृतज्ञता प्रकट करती हूँ। साथ में विभिन्न दाफा समूह, मानः त्वाः दाफा समूह, तननी दाफा समूह, कूटू सागल दाफा समूह, पाँगा दाफा समूह, हाड़ीगाउँ दाफा समूह तथा अन्य सभी दाफा समूह जिसने नेवारी संगीत संकलन करने में प्रत्यक्ष सहयोग किया है उनको सहृदय आभार व्यक्त करती हूँ।

प्रो. डॉ. अजय अष्टपुत्रे सर की भी आभारी हूँ, जो मेरे पीएचडी रजिस्ट्रेशन के समय फ़ैकल्टि ऑफ परफोर्मिंग आर्ट्स के डीन थे। जिनके पूर्ण सहयोग से मेरा कार्य सफल हो पाया। गायन विभाग के डॉ. अश्विनीकुमार सिंह सर तथा तबला विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. डॉ. गौरांग भावसार सर का भी आभार प्रकट करती हूँ जिनके हमेंशा आशीर्वाद वह शुभकामनाएँ तथा समय समय पर उचित मार्गदर्शन मिला है।

उसके उपरांत मैं अपने भाई जयदीप लकुम को सहृदय धन्यवाद करती हूँ जिन्हों ने मेरे शोध कार्य कि पाण्डुलिपि के टंकण करने में सहयोग किया है। मेरे पूरे शोध प्रबंध का प्रूफ संशोधक डॉ. शांति बचलस जी को सहृदय आभार व्यक्त करती हूँ कि जिन्होंने सहज ही इस कार्य को करने के लिए स्वीकार करके सहयोग दिया है।

इसके उपरंत गायन विभाग के सहायक प्राध्यापक मकरंद सरपोतदार सर का आभार करती हूँ जिन्होंने हमेंशा ही मेरे विभ्रांति को मार्गदर्शन दिया है। इस के साथ साथ मेरे सखी सुखदा तंबे दांडेकर, भूमिका

त्रिवेदी, स्मिता दीदी, हेता को धन्यवाद करती हूँ जिन्होंने मेरे कार्य में सहयोग दिया तथा मेरा प्रोत्साहन बढ़ाया।

अंत में फ़ैकल्टि ऑफ परफोर्मिंग आर्ट्स के सभी विभागों और सभी अध्यापकों का आभार प्रकट करती हूँ और साथ ही मेरे विषय में सहयोग करने वाले व्यक्ति जिसने प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप में इस कार्य को पूर्ण रूप देने में सहायता दी है, उन सभी को कोटि कोटि नमन करती हूँ। हमेंशा आप सभी के आशीर्वाद की कामना करती हूँ।

धन्यवाद,

(मोहन शोभा महर्जन)